

MAH MUL/03051/2012  
ISSN: 2319 9318

*Vidyawarta*®  
Peer-Reviewed International Publication

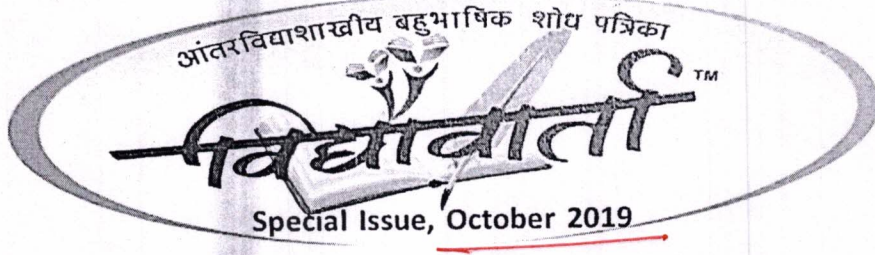
October 2019  
Special Issue

01

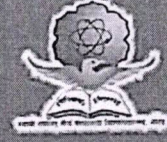
02

MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318



स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड  
तथा हिंदी विभाग और IQAC  
बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय  
बसमतनगर, जि.हिंगोली  
Accredited by NAAC B+Grade



के संयुक्त तत्वावधान  
आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

## समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री चेतना

संपादक  
डॉ. सुभाष क्षीरसागर  
डॉ. रेविता कावले  
डॉ. शेख रजिया शहेनाज



Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

**Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.**

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed  
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295  
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / [www.vidyawarta.com](http://www.vidyawarta.com)

Date of Publication  
04 Oct. 2019

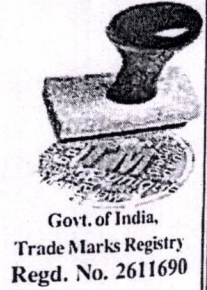
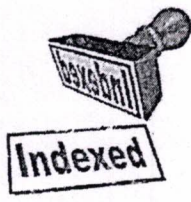
# **vidyawarta**™ International Multilingual Research Journal



“Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Chief Editor Dr. Gholap B. G.

*Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.*

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary.  
*If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.*



<http://www.printingarea.blogspot.com>

**विद्यवार्ता**: Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal Impact Factor 6.021(IJIF)

96)	हिंदी कविता में नारी चेतना प्रा. भंडेकर एन.एस., गंगाखेड	244
97)	समकालीन हिंदी काव्य साहित्य में स्त्री चेतना डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड, परभणी	246
98)	प्रतिरोध केस्वर और कात्यायनी की कविता कदम गजानन साहेबराव, वर्धा	248
99)	समकालीन कविता के कवि-रघुवीर सहाय प्रा. मंगल संभाजीराव खुपसे, हिंगोली	251
100)	समकालीन हिन्दी दलित काव्य में स्त्री चेतना डॉ. बालाजी सोपुरे, कर्नाटक	253
101)	समकालीन हिंदी कविता में स्त्री चेतना प्रा. डॉ. संजय गडपायले, परभणी	255
102)	समकालीन हिंदी काव्य साहित्य में स्त्री चेतना प्रा. संग्राम सोपानराव गायकवाड, लातूर	257
103)	समकालीन हिंदी काव्य साहित्य में स्त्री चेतना प्रा. डॉ. अशोक विश्वनाथ अंधारे, नांदेड	259
104)	अनामिका की कविताओं में व्यक्त स्त्री संवेदना डॉ. संतोष विजय येरावार, देगलूर	260

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

हिंदी कविता में नारी चेतना

डा. सुरेश चंद्र शर्मा

हिंदी कविता, ज्ञान, शोधपूर्ण व विशाल महाविद्यालय, गंगापूर

मनुष्य को अधोप्राप्तित कर रहे हैं। अतः कविता केवल सामाजिक समुदाय के सदस्यों को संपादित है। कविता अधिवासी जीवन काल, आदिवासी-मानव विचारों और जन्म, मरण, जन्म के लिए सदस्यों को कविता के लिए रही है तो सामाजिक व्यवस्था और एक सामाजिक व्यवस्था पर भी लिख रही है। कविता के लिए मैं लिख रहा है -

“कविता है सभी राज राज के और सभी राजको है मिलाओ को संतानितो कुम्भी हो तो है किमके जन्म में दुखी है राज को राजकीय और उसके प्रभाव से गिरान-जमान है राज का सामना ।” उदाहरण के लिए कहें, “अधिकांश कविता के नाम राज, कुम्भी के नाम से पहले साधना प्रयोग हमें, आनेक शहर में, आनेक बंधन जल, आनेक लिए, शोधक केली कविताओं में लिखिका में आदिवासी समुदाय को सुनने-सुनाते वाले, संवेद्यता, समानता, सामाजिक तंत्र और सामाजिक तंत्र खतरा के तंत्र को उजाड़ है।”

एक कविता भी जाति-जाति-धर्म को नहीं मरे। हा धर्म को नहीं अपने मुक्ति का मार्ग तलाश रही है। अतः सामाजिक समानता आज भी दुख को चला और दुख को बनने रहने को सुनने को बोलने को ना रही है। किने-धर्म को चलाओ को बनने रहने को बोलने आज भी बोल रही है। इस तरह कविता में खूब होने वाली को शोधन को चलाओ आज भी चल रही है और कविता हम चलो का रही चलाओ को सिरे में खोज करना चाहती है। एक कविता कविता में कविता को प्रकाश को बना रही है, कविता को शोधन में मुक्ति होने के उजाड़ भी बना रही है और को मुक्ति के सफल को साकार कर रही है।

संदर्भ:

1. बलिष्ठ निबन्धित कविताएँ, मैंगल, संस्करण भारतीय, पृ. 203
2. वही, पृ. 203
3. वही, पृ. 203
4. को मुक्ति के प्रथम संस्करण इस्लाम, संस्करण प्रकाशन, संस्करण प्रथम संस्करण 2009, पृ. 92
5. बलिष्ठ निबन्धित कविताएँ, मैंगल, संस्करण भारतीय, पृ. 203
6. वही, पृ. 203
7. वही, पृ. 203
8. वही, पृ. 203
9. वही, पृ. 203

“को राज को राज को बलिष्ठ कविता बाली है।” उदाहरण के लिए कहें, “अधिकांश कविता के नाम राज, कुम्भी के नाम से पहले साधना प्रयोग हमें, आनेक शहर में, आनेक बंधन जल, आनेक लिए, शोधक केली कविताओं में लिखिका में आदिवासी समुदाय को सुनने-सुनाते वाले, संवेद्यता, समानता, सामाजिक तंत्र और सामाजिक तंत्र खतरा के तंत्र को उजाड़ है।”

समानता राज में ही निहित है उसका अर्थ, किन्तु राज राज तथा उसके अर्थ को साधिका का अर्थान में हम देख पाते हैं? क्या समान में समानता ज्ञानियान हुयो है? अतः-सामान्य का अर्थ-सर्वों के साथ क्या अर्थ, सामान्य अर्थ-सर्व तथा को-सर्वों में समानता ज्ञानियान हुयो है? बलिष्ठ सब हमने समानता (समानता) को ही उनके उजाड़ नकाराधी ही जानते हैं। किन्तु समानता ही जाता है कि, हम किम समानता का विद्यमान विद्यमान आ रहे हैं, कब कविता दखल रह गयो?

सामान्य समान व्यवस्था में को को बलिष्ठ तथा दखल रह गयो माना गया है। सामान्य सामान्य में तो को को दखल का म्यान दिया गया है और अर्थान में...? को को दखल-सर्वता पर विद्यमान कविता जात तो, एक सामान्य सामान्यता विद्यमान देनी है। जहाँ पर को को दखल-सर्वता को दखल किमो भी दखल का म्यान विद्यमान हो उठता है। यह कविता को ही, किमको हमने बलिष्ठ में नकाराधी धूमिका नहीं है, उस में विद्यमान रूप में। हमें अर्थान में विद्यमान बाली में, विद्यमान में खूबता रहने वाली बलिष्ठ, समानता का अर्थ-सर्वता को ही ज्ञानियान, सुनने-सुनाते

में साथ देने वाली पत्नी आदि कई ऐसे रूप हैं, जिनसे हम हमेशा घिरे रहते हैं। पर ऐसा होते हुये भी स्त्रियों पर हो रहे अन्याय-अत्याचारों को दास्तों कभी धमने का नाम नहीं लेती। पुरुषी मानसिकता ने उसे चुल्हे-चौके तक ही उसके अस्तित्व को सीमित कर दिया है। यह उसक सिमटा हुआ अस्तित्व और उसकी विवशता को व्यक्त करते हुये अंकिता जैन लिखती है-

"स्त्रियाँ जो पढ़ना चाहती है राजनीति  
और अर्थशास्त्र में  
मगर सिमट जाती है  
सुशाल मसालों से पेट  
सुंदर आलेपों से तन,  
और सभ्य आचारन से  
घरों को भरने की किताबों में।"

हमारी समाज व्यवस्था में और पुरुष प्रधान संस्कृति के अस्तित्व ने स्त्री को हमेशा दासी तथा भोग की वस्तु समझा है। ऐसी स्थिति में इस सभ्यता की दकियानुसी सोच एक स्त्री को अपने जीवन को विवशता के जिने के लिये मजबूर कर देती है। मानविय धरातल पर होना यह चाहिये कि, उसे पुरुषों के वरावर सम्मान प्राप्त होना आवश्यक है किंतु वास्तव में इन्हीं पुरुषों द्वारा वह प्रताड़ित होती हुई दिखाई देती है। इस संदर्भ में अंकिता जैन को निम्न पंक्तियाँ सराहनीय हैं-

"वो विकती है बाजारों में  
लुट जाए घर-बारों में  
वो छलनी कपड़े से लाज बचाती  
स्त्री ही तो है।"<sup>2</sup>

वर्तमान में प्रशासकीय धरातल पर स्त्रियों के सामाजिक सतर को सुधारने के लिये अनेक प्रयास तथा कानून की व्यवस्था व्यक्तरत दिखाई देती है। परंतु वास्तविकता यह है कि, यह सारे प्रयास कागजों से शुरू होकर कागजों तक ही सीमित है। क्योंकि स्त्रियों के प्रति देखने की हमारे समाज की संकुचित मानसिकता एवं दृष्टिकोण स्त्री स्वतंत्रता के नाम के खोकले नारे लगाते हुये स्त्री को पुरुष दासता को स्वीकारने के लिये बाध्य करते हुये दिखाई देते हैं। इस संदर्भ में शैलेन्द्र चौहान लिखते हैं-

"मदर टेरेसा को आदर्श मानती हुई  
हॉलिवुड से बॉलीवुड तक  
पुरुषों की अपेक्षा आधे दामों में  
अभिनीत करती है खुशो से  
पुरुष-दासता की अनंत भूमिकाएँ।"<sup>3</sup>

आज स्त्रियों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में हुये अगाध परिवर्तनों के साथ-साथ स्त्रियों की स्थितियों में भी समय सापेक्षता की दृष्टि से अमुलाभ्य परिवर्तन दिखाई देता है। आज स्त्रियाँ शिक्षार्जन कर अपने अस्तित्व को सिध्द करते हुये पुरुषी मानसीकता की बँडियों को तोड़ती हुई नजर आ रही है। आज समाज के हर क्षेत्र में, राजनीति, समाजकारन, नौकरी तथा व्यवसायों में हर जगह पर स्त्री ने अपने कदम जमाकर यह सिध्द कर दिखाया है कि वह किसी भी मात्रा में पुरुषों की तुलना में ही कार्यक्षम है। इतना ही नहीं बल्कि आज तो स्त्री मंगल तथा चाँद पर भी जाती हुयी नजर आती है। यह एक तरह से सराहनीय बात है। इसका कारन यह है कि, समाज के पारंपरिक दृष्टिकोण को धुत्कार कर स्त्री अपनी अस्मिता को सिध्द करने के लिये प्रवल आस्था और विश्वास के साथ जिवन से संघर्ष करने लगी है। अंजु शर्मा की निम्न पंक्तियाँ इसी आस्था को व्यक्त करती हैं-

"क्यों नहीं मानता  
कि आज किसी शाप की कामना  
नहीं है मुझे  
कामनाओं के पिराहन के  
कोन को  
गाँठ लगा ली है  
समझदारो को  
जगा लिया है अपनी चेतना को  
हाँ ये तय है  
में अहिल्या नहीं बनींगी!"<sup>4</sup>

अतः स्पष्ट है कि आज स्त्री अपने अस्तित्व को जीवन के हर क्षेत्र में सिध्द कर रही है। परंतु अब वह यह जान चुकी है कि, एक पुरुष का विकास केवल पुरुष तक सिमित है परंतु एक स्त्री का विकास संपुर्ण परिवार के साथ-साथ भविष्य की पिढियों के लिये भी अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिये स्त्री अपनी अस्तित्व सिध्दता के पश्चात अपने भविष्य के पिढियों को भी जागृत करते एवं सक्षम बनाते हुये नजर आती है। इस संदर्भ में अंजु शर्मा कहती हैं-

"आज बिना किसी हिचक कहना चाहती हूँ  
संस्कार और रूढियों के छाते तले  
जब भी घुटने लगे तुम्हारी सांस  
में मुक्त कर दूँगा तुम्हें उन बँडियों से  
फँक देना उस छाते को जिसके नीचे  
रह पाओगी तुम या तुम्हारा सुकून  
मैंरो बँटी....।"<sup>5</sup>

अतः यह स्पष्ट है कि, हिंदी साहित्य में अन्य विविध विमर्शों की तरह नारी विमर्श को भी यथार्थता के साथ अभिव्यक्ति मिली हुयी दिखाई देती है। इसमें नारी के प्रति देखने का पारंपारिक दृष्टिकोन, संकुचित मानसिकता, उसकी विवशता एवं असाहयता, भोगवादिता, रूढ़ि एवं परंपरा को शिकार तथा विद्रोह, दासता की बेड़ियों से ग्रस्त आदि के साथ-साथ उसके जीवन में आये समय सापेक्ष परिवर्तन, शिक्षा-दिक्षा अर्जनोंपरांत उसके जीवन संघर्ष तथा अस्तित्व सिद्धता को हिंदी कविता प्रभावी रूप से अभिव्यक्त करती हुयी दिखाई देती है।

1. <http://kavitakosh.org/kk/> कौन हैं ये स्त्रियाँ- अंकिता जैन
2. <http://kavitakosh.org/kk/> गरोब स्त्री- अंकिता जैन
3. <http://kavitakosh.org/kk/> स्त्री प्रश्न- शैलेंद्र चौहान
4. <http://kavitakosh.org/kk/> में अहित्या नहीं बन्गुंगी!- अंजू शर्मा
5. <http://kavitakosh.org/kk/> बेटों के लिये- अंजू शर्मा



## समकालीन हिंदी काव्य साहित्य में स्त्री चेतना

डॉ. शंभराव लिंबाजी राठोड

सहयोगी प्राध्यापक, शोध निदेशक,

एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष, श्री. शिवाजी महाविद्यालय, परभणी

भारतीय समाज ही नहीं, पूरा विश्व समुदाय अनेकानेक परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। नारी की स्थिति एवं मानसिकता में आए बदलाव ने पिछले हजारों वर्षों से चली आ रही पुरुषसत्तात्मक समाज-व्यवस्था को जड़ें हिला दी हैं। निरसंदेह स्त्री काव्य साहित्य लेखन एक नारीवादी लेखन के रूप में पिछले बीस-पच्चीस वर्षों से स्वतंत्र अस्तित्व को तलाश में है। महिलाओं द्वारा महिलाओं के बारे में लिखने की परम्परा काफी पुरानी है। हिंदी साहित्य की बात की जाए तो मोरा-महादेवी की विरासत से जुड़कर महिला लेखन का एक स्वतंत्र ढाँचा निर्मित होता दिखाई दे रहा है। मोरा एवं महादेवी की परम्परा से जुड़कर भारतीय नारी का जातीय साहित्य गौरवान्वित हो सकता है। साहित्यिक धारातल पर स्त्री लेखन के अलग अस्तित्व को स्वीकारने के मूल में, एक साहित्यकार के रूप में स्त्रियों द्वारा जीवन के यथार्थ अनुभवों से उत्पन्न साझेदारी समझदारी की विशिष्टता का होना है। पिछले बीस-पच्चीस वर्षों में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक नैतिक और सांस्कृतिक सोच में तेजी से बदलाव हुआ है। भ्रष्टाचार का बोलबाला, असंबेदनशील नौकरशाही, तानाशाही- लोकतंत्र, उपभोक्तावाद-बाजारवाद का जोर, संचार माध्यमों का विस्तार, शहरों की ओर पलायन, बेंरोजगारी की समस्या, महंगाई की मार आदि ऐसे कारण हैं जिनकी वजह से आम जनता के जीवन लक्ष्य में भटकाव की स्थिति आ गई है। तत्कालिक सुख, दिशाहोना, हिंसा, आतंक, चाटूकारिता, निराशा, अकेलापन, विवशता, एकरसता, अस्थिरता आदि विसंगतियों ने समाज और साहित्य को गहराई से प्रभावित किया है। ये समस्याएँ आम जनता की होने के कारण महिलाओं की भी हैं। इन सबके अतिरिक्त महिला होने के कारण कुछ और मोर्चों पर इन्हें कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। क्योंकि पुरुष से एक दर्जे नीचे का मनुष्य मानकर इनके साथ व्यवहार किया जाता है। लैंगिक भेदभाव, कृपोषण, यौन उत्पीडन, बलात्कार, दहेज उत्पादीन, वौधव्यता, राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अभाव, उत्तराधिकार की समस्या, अशिक्षा, निरक्षरता, विस्थापन की पीडा, मृत्यु दर की अधिकता आदि अनेक परम्परागत और आधुनिक जीवन की समस्याएँ हैं, जिनका शिकार होकर स्त्री जाती घूटती रही है।